Nehru School Management Journal (NSMJ)
Volume No: 12, Issue No: 1, Year: 2025
PP: 74-80

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

शिवमूर्ति के कथा साहित्य में राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, और लोक-चेतना

पुष्पा कुमारी

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

सारांश :–

समकालीन भारतीय समाज और साहित्य पर कोई भी सार्थक उपयोगी विचार अस्सी के दशक पर विचार के बगैर संभव नहीं है। पचास के दशक में नई कहानी के जन्म से अब तक हिंदी कथा साहित्य में कई अनेक नई विधाओं का जन्म हुआ। अनेक रूपों और छवियों में मौजूद है। यह कथा संग्रह कथा आलोचना के मापदंड और सिद्धांत से परे हैं। शिवमूर्ति का जो कथा संसार है इसमें शॉर्ट स्टोरी के प्रचलित रूप को बदलकर विद्यागत ढांचे में तोड़फोड़ भी की है, अपना दायरा बढ़ाया है, जो समय के यथार्थ को पकड़ने और रचना के क्रम में है। बिगत तीन दशकों में भारतीय समाज का ताना-बाना बदलने की कोशिश जारी है, शिवमूर्ति ने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों को बहुत नजदीक से देखा है। खास करके ग्रामीण समाज में गहरे तक धंसे विचार, व्यवहार, सभ्यता, संस्कृति, राजनीति, सामाजिक रीति रिवाज एवं धारणाओं को अपने कथा साहित्य में मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। शिवमूर्ति के कथा संसार में दलित और स्त्री को संदर्भित किया है। ग्रामीण समाज में स्त्री जातिगत एवं लिंगगत, दोनों विषमताओं की शिकार है। शिवमूर्ति ने परिवर्तन की प्रक्रिया को अपनी आंखों से देखा है। यह एक राजनीतिक प्रतिकार है, जो सावंतवादी व्यवस्था में संभव नहीं होता है। हालांकि भारतीय लोकतंत्र दलित वंचितों के प्रति उपेक्षा के फलस्वरुप संवेदनशील नहीं है। कहीं-कहीं शिवमूर्ति को ऐसा लगता है कि समूची व्यवस्था भ्रष्ट और संवेदनहीन हो चुकी है। शिक्षा व्यवस्था ठीक ढंग से सामाजिक ढांचे में बैठ नहीं रही है। अंबेडकर के सपनों का भारत बनने में बहुत समय लग सकता है।

मुख्य बिंदु- राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, लोक-चेतना, लोकतंत्र, माफतंड, सामंतवादी व्यवस्था, प्रतिकार, संवेदनशील, पुनरागमन, संपूर्कोति, नक्सलबाड़ी, कसाईबाड़ा, मर्मभेदी, नृशंस, अनशन, कलुषित, मार्क्सवादी।

कथा साहित्य में राजनीतिक प्रवृत्ति-

बिगत तीन दशकों में भारतीय समाज का ताना-बाना बदलने की कोशिश जारी है। अस्सी के दशक के आरंभ में इंदिरा गांधी के पुनरागमन और उनकी हत्या के बाद राजीव गांधी के प्रधानमंत्री

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

बनने पर राजनीति और देश की अर्थनीति भी बदलने लगी। जनता पार्टी की सरकार आपसी उठा-पटक और मतभेदों के कारण अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी थी। नक्सलबाड़ी आंदोलन में पहले जैसी धार नहीं थी। जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति फिक्स हो चुकी थी। समाज में परिवर्तन के साथ-साथ कथा साहित्य और राजनीतिक प्रवृत्ति में बदलाव आना स्वाभाविक था। सांकेतिकता कम हो रही थी और कहानी में विस्तार और डिटेल प्रमुख हो रहे थे।

"यह समय संकेतों और इशारों में कहने सुनने का नहीं था। राजेंद्र यादव के हंस पत्रिका का संपादक बनने में अभी कुछ वर्ष बांकी थे। कमलेश्वर और धर्मवीर भारती जैसे कथाकारों संपादकों की अपनी दृष्टि थी। समानांतर कहानी प्रमुख नहीं रहा था। नक्सलबाड़ी आंदोलनो से प्रवाहित कथाकारों ने एक सकारात्मक हस्तक्षेप किया था। प्रगतिशील और जनवादी कहानियों का एक फार्मूला बन रहा था। जिसमें चमक दमक थी, समाज दृष्टि थी पर विविधताएं कम थी।"[1]

कसाईबाड़ा–

धूमिल ने कविता में प्रश्न उठाया था 'समझदार चुप और चीख के अंदर क्या है? उठे हुए हाथ तनी हुई मुठ्ठी और नारे जैसे प्रत्यक्ष विरोध के बरक्स 'कसाईबाड़ा' अमानवीय स्थितियों को उधेड़ कर रख देने वाली वह घटनाएं हैं, जिनकी रिपोर्टिंग एक विशेष अतिनाटकीय शैली में हम अब अक्सर सुनने लगे हैं। मीडिया प्रधान इस युग में जहां राजनीति और सिर्फ राजनीति ही केंद्र में आ गई है। जहां अमानवीय घटनाएं भी खबरें बनकर मनोरंजन का पर्याय बन गई है। वहां कसाईबाड़ा जैसी रचना अपने वृतांतों में ईमानदार बयान करते हुए भीतर तक कुछ ऐसा प्रतिसंसार रचती है, जो हमें एक खास तरह की उिद्वग्नता से भर देती है। अमानवीय स्थितियों से लड़ने की समझ के साथ एक जज्बा उभरता है कि- "कब तक यही हालत रहेगी वास्तव में कसाईबाड़ा इस संपूर्ण मानवीय संसार में राजनीति के अमानवीय होते व्यवहार पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह है जहां सतत बड़ी मछली छोटी मछली को निकालने का प्रयत्न कर रही है और छोटी मछली अभिशप्त है इस मानवीय और मानवीय संसार में करने के लिए चाहे जो भी हो उसकी नियति यही है कि वह या तो एक एक के कांटे में अटके या दूसरे के यहां जो युद्ध युक्त है।"[2] चालाक है शातिर है बड़ी उसी हाथ है साधारण तो मासूमियत ईमानदारी का कोई मोल नहीं कौन सी पार्टी पद हो लाला की तरह राजनीति की पार्टी को पर समझ लेने वाला केवल लेना जानता है देना कुछ नहीं जानता वह केवल अपनी चांदी काटता है उसकी समझदारी केवल इसमें है कि वह अपना सट्टा स्वार्थ बनाए रखें चाहे इसके लिए उसे कितनी ही शतरंज की भी साथ हैं बिछानी पड़े विषय भी ऐसी जिसमें सा और मन दोनों उसी के हाथ कुछ इसी तर्जे बयां पर जिसकी लाठी उसकी भैंस। कसाईबाड़ा शीर्षक की बहु आयामी व्यंजन मार्ग भेजी है कसाई का आशय है ब्रह्म बेदर्द निर्दय निरसेंस मांस विक्रेता

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

बड़ा का अर्थ है घेरा अर्थात पशुशाला। गांव पर केंद्रित इस कहानी को पढ़ लेने के बाद किसी भी संवेदनशील पाठक के भीतर से वेदना और क्षोभ का यही स्वर निकलेगा कि यह गांव तो कसाईबाड़ा है।

कसाईबाड़ा' शिवमूर्ति की प्रतिनिधि कहानियों में से एक है, अपने कथ्य में चुस्त तंज लिए हुए। प्रेमचंद और रेणु दोनों से ही शिवमूर्ति की तुलना अक्सर की जाती रही है। यह केवल इसलिए नहीं कि दोनों का कर्मक्षेत्र कहूँ की लेखन क्षेत्र गाँव रहे बल्कि, शायद दोनों की अनुभव प्रधान अभिव्यक्तियाँ अपना ईमानदार बयान कथा साहित्य के माध्यम से हमारे सामने रखती हैं। भारतीय ग्रामीण चित्रण और ब्योरों को जिस अंदाज में शिवमूर्ति ने चुना है, यह प्रेमचंद की तरह ही लगता है। 'कसाईबाड़ा' में लीडर और प्रधानजी की टकराहट वाली राजनीति चमर्मोत्कर्ष पर है। शनिचरी नाम की एक दलित स्त्री की व्यथा कथा को दर्ज किया गया है, राजनीति की आड़ में आकर प्राईमरी स्कूल के मास्टर, जिन्हें इस पैसे से नफरत है, वे ग्राम प्रधान से होते हुए एम.एल.ए. और मंत्री बनना चाहते हैं। इस स्थिति में वर्तमान प्रधान बिरों का हटाना आवश्यक है। पूरा मामला इसी प्रधान के आस-पास घूमता है। लीडर जी शनिचरी नामक दलित महिला को प्रधान के खिलाफ अनशन करने का आदेश देते हैं।

"कसाईबाड़ा कहानी में गाँव में बिजली की तरह यह खबर फैलती है कि शनिचरी अनशन पर बैठ गई है, ठीक इसी तरह जिस तरह रेणु के 'मैला आँचल' की शुरुआत की अफवाह से होती है और धीरे-धीरे स्थितियाँ पाठक के सामने खुलती हैं। शनिचरी को अनशन पर बैठाने वाले लीडरजी गांधीजी की बात करते हैं और साथ ही गांधी जी का फोटो शनिचरी को सौंपते हुए कहते हैं, गांधी जी का नाम लो, अत्याचारी का या तो नाथ होगा या हृदय परिवर्तन। पर सच है कि शनिचरी का ही नाश या अन्त होता है।"[3] क्योंकि सत्ता की बिसात पर मरता यही हाशिए पर खड़ा व्यक्ति है। खैर प्रधान ने उसकी बेटी तथा गाँव की अन्य लड़कियों को बिना दहेज के आदर्श विवाह के नाम पर बेचकर और ट्रैफिकिंग या देह व्यापार में झोंककर एक और वाहवाही बटोरी है और दूसरी ओर पैसा बनाया है जिसका उपयोग वह ट्यूबवेल लगवाकर और घर के कमरों पर लिंटर डलवाकर कर रहा है और साथ ही अफसोस भी कर रहा है।

"कहानी में प्रधानजी, लीडरजी, दरोगाजी तीनों पात्र एकरेखीय है। एक के हाथ में प्रधानी की सत्ता है, दूसरा सत्ता पाना चाहता है तो तीसरा उस सत्ता का व्यवस्थापक है। सत्ता की इस संरचना का क्रूरतम प्रतीक है यह रचना। शनिचरी के अलावा कहानी की अन्य तीन स्त्री पात्र हैं। तीनों ही पुरुष प्रधान सत्ता का शिकार हैं। तीनों ही अनपढ़ है।"[4]

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

शिवमूर्ति जी ने 'केशर कस्तूरी' में राजनैतिक चेतना का बहुत व्यापक चित्रण किया है। साथ ही देश में विशेषकर ग्रामीण जीवन में घटनेवाली राजनैतिक घटनाओं, राजनैतिक उथल-पुथल और राजनीति के दाँव-पेच को चित्रित करने में वे चूके भी नहीं है। 'केशर कस्तूरी' कहानी-संग्रह में सरकारी रोजगार व्यवस्था में प्रचलित राजनीति से संबंधित भष्टाचार और सरकारी तंत्र की असलियत उजागर करने का प्रयास शिवमूर्ति जी ने साफ दिखाया है। उदाहरण के लिए-पता चला है कि वे सभी उच्चाधिकारियों के केंडिडेटस के लिए अलिखित रुप से रिर्जव हो चुके हैं। उम्मीदवार किसी अधिकारी के घर चार साल से बर्तन मल रहे थे, किसी के घर छह साल से। उपर्युक्त चर्चा से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि 'केशर कस्तूरी' कहानी संग्रह में शिवमूर्ति जी ने भारत में आज प्रचलित जिस कलुषित राजनैतिक चेतना का समावेश हुआ है, वह असलियत उजागर करनेवाला है। यदि हम सकारात्मक दृष्टि से देखें तो, 'केशर कस्तूरी' काफी सुधारात्मक सुझावों से सम्पन्न भी है। शिवमूर्ति जी जरुर यह चाहते होंगे कि पाठक इस सुधारात्मक चेतना को ठीक पहचाने और इसका संवाहक बनकर भारतीय समाज को बेहतर राजनैतिक अवस्था की ओर ले जाए। इसके संबंध में डॉ. अवधेश चंद्रगुप्त के शब्दों में- "हमारे देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह रहा है कि अधिकांश राजनैतिक नेतागण और अन्य राज्याधिकारी राष्ट्र की उपेक्षा कर अपनी स्वार्थसिद्ध करने लगे। परिणामस्वरुप अन्तरराष्ट्रीयता में वृद्धि के कारण अपेक्षित मात्रा में न तो भारतीय नागरिकों में नैतिक उन्नयन ही संभव हो सका न देश ही स्वावलम्बी बन सका। फिर भी नाना प्रकार की योजनाओं द्वारा तत्कालीन नवगठित सरकार द्वारा देश को समृद्ध बनाने का प्रयास किया जाता रहा।"[5]

'केशर कस्तूरी'–

'केशर कस्तूरी' जैसी एक उदात्त साहित्यिक कृति में कथापात्रों से संबंधित आर्थिक चैतना और उससे जुड़े हुए आर्थिक-सिद्धान्त विशेष का समावेश होना स्वाभाविक है। कल्पना वर्मा अपनी पुस्तक में लिखती हैं- समाज में मुख्यतः दो वर्ग स्वीकार किये जा सकते हैं- विकसित तथा अविकसित या सीधे सपाट शब्दों में शोषक और शोषित। अगर रचनाकार इस अविकसित वर्ग का पक्षधर है, तो वह उसकी ईमानदारी है। इस संबंध में शिवमूर्ति जी ने खुद कहा है- हमारा समाज बहुत पहले से दो हिस्सों में बँटा हुआ है। बहुत छोटा हिस्सा सब तरह की सुख-सुविधा और विशेषाधिकारों का भोग करता तथा एक बड़े समूह के हिस्से का सुख चैन हड़पता है। बड़ा हिस्सा यदा-कदा इसके विरुद्ध उठते हुए हर तरह का अन्याय और दुःख झेलता भोगता रहता आया है। राजाओं महाराजाओं और उससे भी पहले कबीलाई सत्ता से लेकर आज के इस आधुनिक कहे जानेवाले दौर तक यह उसी तरह जारी है। सिर्फ उसका रूप बदलता रहा है। "केशर कस्तूरी में

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

शिवमूर्ति जी ने उस आर्थिक सिद्धान्त का समावेश बड़ी ईमानदारी से किया है, जो अविकसित या शोषित वर्ग के जीवन से संबंध रखता है। अपनी कहानियों द्वारा शिवमूर्ति जी ने अनवरत लड़ाई की है, आर्थिक दृष्टि से हाशिए पर छोड़े गये शोषित एवं अविकसित ग्रामीण जनता के संघर्षों को अनावरण करने के लिए। निम्न वर्ग और निम्न मध्य वर्ग की आर्थिक विपन्नताओं का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्रों को केन्द्र में रखकर आर्थिक तंगियों की चर्चा बड़ी निपुणता से की है।"[6]

'केशर कस्तूरी' में चित्रित आर्थिक चेतना के आयामों को परखने से हमें ऐसा गलता है कि सामंतवाद एवं पूँजीवाद का खंडन करने के प्रति शिवमूर्ति जी उत्सुक हैं और मार्क्सवादी आर्थिक विचारधारा की शैली को अपनाकर वे अपनी कहानियों के विवरण को आगे बढ़ाने में बड़े तत्पर रहे हैं। वास्तविकता जिस प्रकार रहती है, ठीक उसी प्रकार के सुस्पष्ट और विशिष्ट चित्रण पर आधारित है "मार्क्सवादी आर्थिक विश्लेषण। मार्क्सवादी आर्थिक विचारधारा में आर्थिक घुटन को उसकी समग्रता में समझा जाता है। मार्क्सवादी आर्थिक विचारधारा से प्रभावित साहित्यकार अपने-अपने समय के आम जीवन को अपनी कृतियों में असलियत के साथ अंकन करने में तत्पर रहते हैं। इस दृष्टि से देखें तो शिवमूर्ति जी ने मार्क्सवादी आर्थिक विचारधारा से प्रभावित साहित्यकारों की भाँति भारतीय ग्रामीण जीवन में, विशेषकर उत्तर भारत के अवध-प्रदेश के ग्रामीण जीवन में उपस्थित आर्थिक संघर्षों को शामिल करके अपनी कहानियों द्वारा विपन्नता की दुखद गाथाएँ रची हैं और अपनी कहानियों द्वारा शिवमूर्ति ने यह स्पष्ट दिखाया है कि भारतीय ग्रामीण जनता सदैव आर्थिक शोषण का शिकार है।"[7]

'तिरिया चरित्तर'–

'तिरिया चरित्तर' में भ्रष्टाचार की पोल खोलकर ढ़ोंगी राजनीति से लाभ उठानेवाले प्रशासनिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार का अत्यन्त संश्लिष्ट चित्रण शिवमूर्ति जी ने किया है। 'तिरिया चरित्तर में प्रस्तुत पंच राजनैतिक भ्रष्टचारी प्रशासक का प्रतिनिधि है। तिरिया चरित्तर' की नायिका विमली को दागने का फैसला सुनाकर सरपंच बोधन महतो पूछता है कि "किसी को कोई एतराज हो तो बोलो। सबको मंजूर है? यहाँ पर मैं समझती हूँ कि राजनैतिक भ्रष्टाचार का सबसे ज्यादा शिकार बननेवाली भारत की नारियाँ ही हैं। विमली को जिस प्रकार से सामाजिक व्यवस्था देखती है, वह किसी भी परिस्थिति में ठीक नहीं है। लोगों के ताने सुनकर विमली का परिवार भी परेशान है। कहा भी जाता है कि महिला के सबसे बड़ा दुश्मन महिला ही होती है। सामाजिक रीति-रिवाज के अनुसार हर व्यक्ति को चलना चाहिए, लेकिन राजनीति के कारण केवल महिलाओं को ही झेलना पड़ता है।"[8]

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

उपन्यास ' त्रिशूल–

त्रिशूल' अपने समय में व्याप्त धार्मिक एवं राजनीतिक उथल-पुथल की राजनीतिक कहानी है, जहाँ देशव्यापी साम्प्रदायिक तनाव, जातिगत विद्रूपता एवं हिंसा की साजिश को निर्भयता से बेनकाब, हिन्दू-मुस्लिम, जाति का नाम लेकर, धर्म-पूछ कर, गोली चलाना आम बात होती जा रही है। लोगों को जानवर की तरह मारा जा रहे है। जहाँ उपन्यास में शास्त्री जैसा पात्र हिंदू के नाम पर ढोंग करता है, और पाले जो कि छोटी जाति का लोक गायक है, हिन्दू धर्म ग्रंथों से चुन-चुनकर बुराईयों को सामने लाता है, इसी कारण शास्त्री उसका वध भी कर देता है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में शिवमूर्ति का 'त्रिशूल' उपन्यास साम्प्रदायिकता का जीवंत दस्तावेज प्रतीत हो रहा है। आज के परिदृश्य में जिस प्रकार का रामनाम का राजनीतिकरण हुआ है और रामराज्य की जो नई परिकल्पना की जा रही है, वह तुलसीदास के रामराज्य की कल्पना से कितना मेल रखता है, यह जानने के लिए 'त्रिशूल' उपन्यास अपने-आप में महत्वपूर्ण है।

लोक चेतना प्रमुख बिंदु–

यथार्थ का चित्रण- या सिर्फ गांव की सुंदरता नहीं बल्कि उसकी विकृतियों जैसे शोषण भ्रष्टाचार और सामंती व्यवस्था को दिखाए को भी उजागर करती है

शोषितों की आवाज-गरीब दलित और खासकर स्त्रियों के जीवन के संघर्ष, उनकी पीर और न्याय के लिए उनके अथक लड़ाई को केंद्रीय बनाना जन जागरण शाहिद के माध्यम से लोगों को ज्यादा जगाता है और उनमें सामाजिक राजनीतिक या राष्ट्रीय चेतना उभरता है उनकी आर्थिक स्थिति को ठीक करने का उपाय और स्वरोजगार की व्यवस्था करना हमारे जीवन मूल्य का उद्देश्य होना चाहिए।

निष्कर्ष:-

शिवमूर्ति का पूरा साहित्य देखें तो यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने वंचितों को न्याय देने का प्रयास किया है। अर्थात वंचितों के प्रवक्ता बनकर काम कर रहे हैं। शिवमूर्ति गांव के लेखक है। उनके साहित्य में आया गांव भारत का प्रतिनिधि गांव है। गांव अपनी कहानी शिवमूर्ति के माध्यम से कह रहा है अर्थात शब्दों के माध्यम से बोल रहा है। अपने भीतर की हलचलों को व्यक्त कर रहा है अपने संकटों का महाभारत पाठकों के सामने लेकर जा रहा है गांव पहले से भी कसाईबड़ा ही रहे है पर कसाईबड़ा कहानी में लीडराईन अपने लीडर पति राम बुझावन से कहती है- "तुम लोग कसाई हो सारा गांव कसाई बड़ा है मैं रहूंगी इस गांव में।"

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

संदर्भ सूची :–

1. वंचितों के प्रवक्ता शिवमूर्ति, संजय नवले, अमन प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 2019 पृष्ठ संख्या 15
2. वही, पृष्ठ 18
3. वही पृष्ठ 20
4. वही पृष्ठ 21
5. सृजन का रसायन, शिवमूर्ति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014 पृष्ठ संख्या 12
6. ग्रामीण परिवेश और शिवमूर्ति का रचना संसार, डॉ. चंद्रमा प्रसाद, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 2023 पृष्ठ 42
7. वही पृष्ठ 47
8. केसर कस्तूरी, शिवमूर्ति, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2007 पृष्ठ संख्या 53

© Copyright @ Authors